तृतीय अध्याय :

(ऊ)" नाटक के गीत "

डॉ. रामगोपाल शर्मा दिनेश जी पूरे चार दशकों से हिन्दी काव्य जगत को समृध्द करने का कार्य कर रहे हैं। अबतक आपके सोलह काव्य ग्रंथ - प्रकाशित हुए है। आपको तीनबार काव्य पुरस्कार मिला है। " अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन"ने राष्ट्रकवि के रूपमें " आधुनिक कवि भाग २० " के रूपमें आपको प्रकाशित किया है। "[१] अत: इन सबसे यह स्पष्ट है, कि डॉ. दिनेश सबसे पहले एक कवि है , बादमें नाटककार, समीक्षक आदि।

डॉ. दिनेश एक अच्छे गीतकार भी है। उनके " जलती रहे मशा ल " "सर्वोदय के गीत " " जयघोष ","हुकार और झंकार ","आयाम " ,"रूपगंधा" आदि कई गीत संग्रह निकल चुके हैं। यही कारण है,कि पृथ्वीराज नाटक के गीत भी अन्य हिन्दी नाटकों के गीतों की अपेक्षा अधिक गठित , प्रवाहयुक्त और मधुर है। नाटक से अलग भी उनका साहित्यिक मूल्य है।

" पृथ्वीराज " नाटक के गीत शुध्द गीत की दृष्टि से भी सरस है। उत्कृष्ट गीत वह माना जाता है, जिसमें लाक्षणिकता , भाव प्रवणता और संगीतमयता के साथ हृदय के किसी एक भाव का आंदोलन कलापूर्ण ढंगसे अभिव्यक्त हुआ हो। नाटक के पात्र अवस्थानुरूप अलग अलग भाव हृदयस्पर्शी शब्दों मे प्रभावित करते हैं। और यदि नाटक की पृष्ठभूमि हटायी भी जाय तो भी उनका सौन्दर्य बराबर बना रहता है। यह तभी संभव है , जब नाटककार मूलत: कवि भी हो यह बात जयशंकर प्रसाद के नाटकों मे जिस तरह मिलती है , उसी तरह डॉ. दिनेश के इस नाटकमें।

"पृथ्वीराज " नाटक के गीतों की समीक्षा करते समय इस बातको भूलना

---

१) पृथ्वीराज " नाटकमें लेखक परिचय , पृष्ट ३.

नहीं चाहिए की लेखक सबसे पहले एक कवि है। लेखक का कवि हृदय ही गीतों के द्वारा व्यक्त हुआ है। प्रसाद के नाटकों के समान इसमें गीतो की भरमार तो नहीं है, फिर भी नाटके में जी गीत है, वह परिस्थिति के अनुरूप, पात्रों के चरित्र चित्रण करने में सहायक तथा कथावस्तु को आगे बढाने मे उपयुक्त है।

पृथ्वीराज नाटक में कुल चार गीत है। नाटक का प्रारंभ और अंत दोनों गीत से हुआ है।बदनौर के निकट अरावली की एक उपत्यका में प्रभात के समय राव सुरताण की पुत्री तारा वीणा वादन कर रही है। तारा वीणा के झंकारों के साथ झूमती हुई गीत प्रारंभ करती है। दूसरा गीत प्रथम अंक के चतुर्थ दृश्य के प्रारंभ मे है। शिवान्तिनगर के बाहर हरी फसल के पास बरगद के निचे ग्रामीण लोगों का मेला लगा हुआ है। उसमें सामूहिक नृत्य और गान हो रहा है। नृत्य के बाद ढोलक बजानेवाला लोकगीत प्रारंभ करता है।तीसरा गीत तृतीय अंक के तृतीय दृश्य के प्रारंभ मे है। तारा प्रभात के समय बदनौर के निकट अरावली पर्वत की एक उपत्यका मे वीणावादन कर रही है। वीणा बजाती हुई गीत गाती है। चौथा गीत अंतिम अंक के अंतिम दृश्य के अंत मे है। पृथ्वीराज की वीरता के कारण मेवाड के सारे संकट समाप्त होते है। महाराणा रायमल युध्दमें विजयी होते हैं। पृथ्वीराज और तारा की शादी होती है। इन सबसे आनंदित होकर महाराणा रायमल उसे विजयपर्व मानते हुए विजय गीत गाते है, सब उनके स्वर मे स्वर मिलाकर उस गीत को दोहराते हैं।

पृथ्वीराज नाटक के इन चार गीतों का विषय के अनुरूप विश्लेषण इस प्रकार हो सकता है --

१) प्रकृति सौन्दर्य की अभिव्यक्ति,
२) लोकगीत,
३) मानसिक स्थिति का चित्रण,
४) आनन्द की अभिव्यक्ति।

अत: गीत में व्यक्त कवि के विचार और गीत सौन्दर्य को इन विशेषता के आधारपर बताया जा सकता है।

१) प्रकृति सौन्दर्य की अभिव्यक्ति :

अरावली पर्वत की हरीभरी उपत्यका में प्रभात के समय तारा वीणा बजाते हुए गीत गा रही है, जिसमें वह सबेरे के प्राकृतिक सौन्दर्य का चित्रण करती है। अरावली पर्वत की सारी घाटी हरियाली से भरी है, पर्वत पर बादल मंडरा रहे है और उसी समय क्षितिजपर सूरज का आगमन हो रहा है, जैसे धुष्य पर लगाया गया बाण हो। इसमें लेखक ने सूरज को क्षितिज रूपी धनुष्य पर लगाया गया बाण कहा है।

सूरज के आगमन होते ही अंधकार मृग के समान भाग रहा है, लेकिन प्रकाश की गति तो बडी तेज है। लेखक ने इसमें एक और भावना व्यक्त की है, कि प्रकाश के सामने से अंधकार बचकर भाग भी नहीं सकता अन्तमें उसे प्रकाशमे ही विलीन होना पडता है। जैसे –

अरे कहाँ तक तू दौडेगा, जाल बडा इस नभ से
फँस जा, फँस जा यही बावरे -------।"[१]

इस गीतमें लेखकने प्रकाश का आगमन होने पर आनन्द से नाचने की कल्पना व्यक्त की है तो दूसरी ओर वे कहते हैं कि, सूरज के आते ही शरीर में आनन्द की भावना भर जाती है और आनंद के क्षणमें कोई इच्छा भी अधूरी नहीं रहती। इसमें लेखक चिंतनशील प्रवृत्ति के दिखाई देते है।

गीत के अंतिम अंशमें सबेरे के प्राकृतिक सौन्दर्य को देखकर डाली डालीपर पंछियों को गाने की प्रेरणा देता है, जिनकी आवाज से प्रभात की गंध चारो ओर फैल जाती है।

" शक्ति और स्वर के संगम पर
मेरी वीणा गाती ।"[२]

---

१) पृथ्वीराज – पृष्ट. २
२) पृथ्वीराज – पृ. २

इसमें तारा के मन का चित्रण मिलता है। नाटक की कथा इस गीत से प्रारंभ होती है, जिसकी सूचना भी इन पंक्तिओं मे व्यक्त हो गयी है। वीणा के स्वरों के साथ गीत होने से तारा के वीणावादिनी स्वरूप का परिचय मिलता है।

इसप्रकार यह गीत स्वंय अपने आपमे साहित्यिक मूल्य रखते हुए नाटक की कथा तथा चरित्र चित्रण में भी उपयुक्त सिध्द होता है।

२) लोकगीत :

प्रथम अंक के चतुर्थ दृश्यमें लेखक ने एक लोकगीत को रखा है। जिसमे देहाती जन जीवन का चित्रण मिलता है। देहाती अपने खेतों में हरी-भरी फसल को देख कर हर्षित होते है। लोकगीत के माध्यम से लेखकनेकिसानों के मन का चित्रण किया है। लेखक ने इस गीतमें सहकारिता के जीवन का संकेत दिया है। सभी मिलकर जीवन में नवीनता लाने चाहते हैं। हरी फसल देखकर केवल किसान ही आनंदित नहीं होते , तो पशु, पक्षी भी आनंदी होकर झूम उठते हैं।

इस लोकगीत में भले ही कोई काव्य सौन्दर्य न हो, तो भी कथा में यह गीत बाधा नहीं डालता। इस गीत के कारण नाटककार आसानी से कथा को आगे बढा सके हैं। शिवान्तिनगर के सारे लोग नगर के बाहर मेले में है और उधर नगरमें संग्रामसिंह बचने के लिए वीदा राजपूत के पास आता है। जयमल वहाँ आकर सांगा पर हमला करता है लेकिन सांगा को बचाने मे वीदा राजपूत जयमल द्वारा मारा जाता है। जयमल वहाँ से भाग जाता है।

३) मानसिक स्थिति का चित्रण :

प्रभात के समय अरावली की एक उपत्यका में तारा वीणा बजाती हुई गीत गा रही है। जिसमें तारा अपने मन की भावना को व्यक्त करती है। साथ ही इस गीतमे वह ईर्दगिर्द के वातावरण का चित्रण भी करती है। वह वीणा

के स्वरों को दूर मत जाओ ऐसा कह रही हैं। पराये राज्यमें सभी तो विरोधी होते हैं, उनसे बचकर सावधानी से ही कार्य करना पडता है।

तारा का मन अशांत है, वह अपने ओठो को सरस करने के लिए कितने ही आँसू पी चुकी है। लेकिन उनकी इच्छा पुर्ति नहीं हुयी है। उनकी आशा है, कि उसने जो प्रतिज्ञा की है, उसकी पूर्ति पृथ्वीराज ही करेगा, लेकिन जब उसे मालूम होता है, कि पृथ्वीराज का निर्वासन दण्ड समाप्त हुआ तथा मेवाड मे उनका भव्य स्वागत हुआ। यह समाचार सुनते ही व दुःखी बनी है और वह दुःख की भावना ही इस गीत के द्वारा व्यक्त करती है।

तारा की मनस्थिति का चित्रण इसमें सहजता से हुआ है। कविता की परिभाषा - " मन की उच्छृंखल भावनाओं की अभिव्यक्ति ही कविता है " इसमे यथार्थ हो उठी है।

४) <u>आनन्द की अभिव्यक्ति</u> :

नाटक के अन्त में जब युध्दमे महाराणा रायमल की विजय होती है। पृथ्वीराज और तारा की शादी होती है, तब महाराणा उस क्षण को मंगलमय विजय पर्व बताते है और आनंद से गीत गाते है।

इस गीतमे राजपूतों की वीरता का चित्रण मिलता है। राजपूत अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए जहाँ भी युध्दभूमि पुकारती है वहाँ जाकर अपने देश के गौरव को बचाते है -

" रणचण्डी ने जहाँ पुकारा,
बहीं - वहीं चमकी असि - धारा,
हमें देश का गौरव प्यारा। " [१]

बलिदान के रास्तेपर चलकर रणभूमि की भूख मिटाने की धुन जिनमें रहती है, वही युध्द में विजयी होते हैं। राजपूतो ने वहीं वीरता मेवाड के

---

१) पृथ्वीराज, पृष्ठ १०३

युध्द में दिखाते हैं। वह तो -

" मेवांडी रण के मतवाले,
जन्मभूमि के नित रखवाले,
चहाँ जहाँ चमकाएँ भाले,
किसमें बल जो कर सामना। "[१]

मेवाड के राजपूत तो रणभूमि के मतवाले और मातृभूमि के रखवाले हैं। उनका मुकाबला कौन कर सकता है। युध्दभूमि में जो आखिरतक रहता है, उनकी ही विजय निश्चित होती है।

युध्द में विजयी होने का आनंद इसमे व्यक्त हुआ है। नाटक के उद्देश्य की पूर्ति इस गीत के द्वारा व्यक्त होती है। नाटक का उद्देश्य सफल हुआ है, यह भी इस गीत से स्पष्ठ होता हैं।

निष्कर्ष :

अत: इन गीतों को देखकर यही कहा जा सकता है, कि, पृथ्वीराज नाटक के गीत कथावस्तु के अनुकूल और पात्रों के चरित्र चित्रण करने के उपयुक्त तथा उद्देश्य की पूर्ति में सहायक है।

नाटक में इन गीतों के शिवाय मेवाड के राजदरबार में एक नृत्य का दृश्य है , अगर उस समय भी लेखक कोई गीत रखते तो वह युक्तिसंगत ही होता। फिर भी नृत्य कथा को रोचकता प्रदान करने में सहायक है।

---

१) पृथ्वीराज, पृष्ठ, १०४.